Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 12, Issue 2 | November 2024 - April 2025 | pp. 21-27

भारत-मालदीव संबंधों में चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शोभा गौतम

सह आचार्य, राजनीति विज्ञान
से.मु.मा. राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

शोध सारांश

पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण एवं मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करना भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख सिद्धांत रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'पड़ोसी प्रथम' नीति एवं 'सागर' दृष्टिकोण भी यही परिलक्षित करता है। मालदीव भारत का एक ऐसा पड़ोसी देश है जिसके साथ अच्छे संबंधों की स्थापना करना भू-सामरिक कारणों से भी अनिवार्य है। मालदीव में समय-समय पर उपस्थित राजनीतिक अस्थिरता, विगत वर्षों में मालदीव की राजनीति पर हावी होता कट्टरपंथ आदि कारकों ने भारत-मालदीव संबंधों में चुनौतियाँ उपस्थिति की है। मालदीव के चीन की बीआरआई में सम्मिलित होने से मालदीव में चीन का प्रभाव बढ़ रहा है, दूसरी और मालदीव में संचालित इंडिया आउट कैंपेन जैसे अभियानों से भारत -मालदीव संबंधों में तनाव का बोध होता है। मालदीव की वर्तमान मोहम्मद मुइज्जू सरकार चीन से अधिक प्रभावित मानी जाती है। ऐसे में नवीन सरकार के आने के बाद भारत -मालदीव संबंधों में चुनौतियाँ और अधिक बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत मालदीव संबंधों में निहित चुनौतियों विशेष रूप से हिंद महासागर क्षेत्र एवं मालदीव में चीन की उपस्थिति एवं प्रभाव बढ़ने के बाद भारत-मालदीव संबंधों में आई चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए इन चुनौतियों के समाधान हेतु सुझाव दिए गए हैं।

संकेताक्षर—*सागर, भू-सामरिक, कट्टरपंथ, इंडिया-आउट, बीआरआई*

प्रस्तावना

भारत सदैव अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंधों की स्थापना हेतु प्रयासरत रहा है। पूर्व विदेश सचिव श्याम शरण का कहना था कि "भारत के एक क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने की कुंजी इसके पड़ोस के पास है।"[1] वर्ष 2014 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भी आधिकारिक रूप से 'पड़ोसी प्रथम' विदेश नीति की घोषणा की।[2] 12 मार्च 2015 को भारत ने हिंद महासागर के लिए एक दृष्टिकोण सागर (सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल द रीजन) की घोषणा की जिसमें सामुद्रिक पड़ोसी देशों के साथ संबंध बढ़ाने पर बल दिया गया।[3]

मालदीव हिंद महासागर में स्थित भारत का समुद्री पड़ोसी देश हैं। भारत और मालदीव के मध्य लंबे समय से राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं। भारत मालदीव को एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में सबसे पहले मान्यता देने वाले देशों में से एक है। दोनों ही देश राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्र संघ, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और सार्क के सदस्य रहे हैं। वर्ष 1988 में अब्दुल्ला लतीफी विद्रोही नेता ने जब श्रीलंका विद्रोहियों की मदद से तत्कालीन राष्ट्रपति मौमून अब्दुल गयूम की सत्ता पलटने की कोशिश की तो भारतीय वायु सेना ने 'ऑपरेशन कैक्टस' कार्यवाही कर इस प्रयास को नाकाम कर दिया। भारत ने मालदीव में विभिन्न संस्थानों की स्थापना की है, तथा वर्तमान में भारत मालदीव को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण भी प्रदान कर रहा है किंतु फिर भी भारत मालदीव संबंध चुनौतियों से अछूते नहीं रहे हैं और वर्तमान समय में हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की उपस्थिति एवं प्रभाव बढ़ने के कारण भारत मालदीव संबंधों में नई चुनौतियाँ उपस्थित हो रही है।

ISSN 2348-3857

शोध के उद्देश्य

- भारत-मालदीव संबंधों में निहित चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- भारत- मालदीव संबंधों में हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की उपस्थिति बढ़ने से उत्पन्न हुई नवीन चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

शोध कार्य हेतु ऐतिहासिक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, एवं तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य हेतु तथ्यों एवं आंकड़ों के संकलन हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, इन्टरनेट, सरकारी दस्तावेजों एवं भारत-मालदीव समझौतों के प्रलेखों का उपयोग किया गया है।

भारत-मालदीव संबंधों में चुनौतियाँ

मालदीव के द्वीप बहुत बिखरे हुए हैं तथा मालदीव के पास वित्तीय स्रोतों का अभाव है। अतः मालदीव अपने आर्थिक विकास के लिए अन्य देशों से प्राप्त सहायता पर निर्भर है। अपने आर्थिक विकास के लिए अन्य देशों पर निर्भर होने के कारण मालदीव में अन्य शक्तियों विशेष रूप से चीन का हस्तक्षेप अधिक प्रभावी रहता है।

मालदीव में बढ़ता कट्टरपंथ

विगत वर्षों में मालदीव में कट्टरपंथी घटनाएं बढ़ी हैं। अब्दुल गयूम द्वारा अपनायी गई कुछ नीतियों के कारण मालदीव का समाज कट्टरपंथ की ओर अग्रसर हुआ। लश्कर-ए-तैयबा के धर्मार्थ संगठन द्वारा खिदमत-ए-खल्क ने वर्ष 2004 की सुनामी के बाद राहत कार्यों के बहाने से मालदीव के दक्षिणी हिस्सों में अपना प्रभाव कायम किया (स्वामी, 2007)।[4] वर्ष 2007 से ही मालदीव में आतंकवादी घटनाएं होती रही है। वर्ष 2007 में माले बम विस्फोट की जांच से मालदीव स्थित आतंकवादी संगठन एवं लश्कर-ए-तैयबा के बीच संबंधों का पता चला।[5] वर्ष 2008 में नशीद के राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद मालदीव की राजनीति में कट्टरपंथियों का प्रभाव अधालथ पार्टी' एवं नशीद के विरोधियों के कारण बढ़ने लगा। मालदीव के कई छात्र अध्ययन के लिए पाकिस्तान और सऊदी अरब गए और अनेक छात्रों ने वहां की कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर जिहादी समूहों की सदस्यता ली।[6] मालदीव में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण भी मालदीव के छात्र जिहादी समूहों की ओर आकर्षित हुए। सऊदी अरब ने मालदीव के रूढ़िवादी इमामों का वित्त पोषण किया, जिन्होंने मालदीव में बहावबादी सिद्धांतों का प्रसार किया। यामीन सरकार के कार्यकाल में मालदीव और सऊदी अरब के मध्य संबंध तेजी से बढ़े तथा मालदीव में सऊदी अरब का निवेश बढ़ा (स्टोरे, 2019)।[7]

मालदीव में कोविड-19 के प्रसार से हिंसक उग्रवाद को रोकने की सरकारी क्षमता में कमी आयी। महामारी का फायदा उठाकर अपनी विचारधारा को फैलाने के लिए मालदीव में आईएसआईएस समर्थकों द्वारा नए सिरे से प्रयास किए गये। उन्होंने महामारी को लोगों के पापों और "गैर-इस्लामिक" पर्यटन उद्योग के लिए एक दैवीय दंड के रूप में प्रस्तुत किया। अप्रैल 2020 मे महिबाधू द्वीप के बंदरगाह पर आईएसआईएस ने मालदीव में हमले की जिम्मेदारी ली।[8]

भारत पर प्रभाव—भारत के लिए चिंताजनक बात यह है कि भारत द्वारा आतंकी समूह 'स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया' (सिमी) पर प्रतिबंध लगाने के बाद इसके सदस्य मालदीव चले गए। मालदीव के जिहादी आईएसआईएस, अल कायदा से जुड़े जमात अल नुसरा, इस्लामिक फ्रंट और फ्री सीरियन आर्मी में सम्मिलित हो रहे हैं। भारत की चिन्ता यह है कि ये आतंकवादी संगठन भारत और भारतीय परिसंपत्तियों पर हमले के लिए मालदीव को लॉन्च पैड के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में आतंकवादी हमले के बाद आतंकवाद पुनः भारत के सामने एक प्रमुख चुनौती के रूप में उभरा है। ऐसे में भारत के पड़ोसी देशों में कट्टरपंथी संगठनों की सक्रियता भारत के लिए एक चिंता का विषय है। मालदीव में मोहम्मद मुइज्जू के राष्ट्रपति बनने के बाद मालदीव में तेजी से कट्टरपंथियों की संख्या बढ़ रही है। कट्टरपंथियों को पारंपरिक तौर पर राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू का समर्थक बताया जाता है। मालदीव के कट्टरपंथी मौलानाओं ने जनवरी 2024 मे फतवा जारी कर शरीर पर टैटू को निषिद्ध बताया है। उन्होंने धमकी दी है कि अगर किसी व्यक्ति के शरीर पर टैटू दिखाई देता है, तो उसके खिलाफ इस्लामिक कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। फतवे में लिखा है "शरीर के किसी भी हिस्से पर किसी भी आकार का टैटू रखने की अनुमति नहीं है और इस्लाम में यह निषिद्ध है। क्योंकि यह अल्लाह द्वारा बनाए गए रूप को बदल रहा है।"[9]

राजनीतिक अस्थिरता

वर्ष 2008 में लोकतंत्र स्थापना के बाद भी मालदीव राजनीतिक अस्थिरता का शिकार रहा है। वर्ष 2012, वर्ष 2013, वर्ष 2015 और वर्ष 2018 में कुछ इस तरह की राजनीतिक घटनाएं होती रही जिससे कि मालदीव में लोकतंत्र का भविष्य संकट में नजर आया। मालदीव में राजनीतिक अस्थिरता निर्मित होने पर वहां का पर्यटन उद्योग और अर्थव्यवस्था भी प्रभावित होती है। मालदीव में राजनीतिक अस्थायित्व के वर्ष 2012 में यूरोप से आने वाले पर्यटकों की संख्या में 4% की कमी देखी गई (पर्यटन मंत्रालय, मालदीव गणराज्य, 2012)।[10]

भारत पर प्रभाव—मालदीव में दक्षिण एशियाई देशों से अधिकांश प्रवासी कामगार बांग्लादेश, भारत और श्रीलंका से है। भारतीय प्रवासी समुदाय मालदीव में कार्यरत दूसरा बड़ा प्रवासी समुदाय है। अतः राजनीतिक अस्थिरता से भारतीय प्रवासी समुदाय भी प्रभावित होता है। भारत अपने पड़ोसी देशों की राजनीतिक अस्थिरता को लेकर सदैव से चिंतित रहा है। भारत ने लोकतंत्र समर्थक सभी देशों से आग्रह किया कि वे मालदीव में लोकतंत्र का संरक्षण सुनिश्चित करने में सहयोग करें। यद्यपि भारत सदैव पड़ोसी देशों में घटित राजनीतिक घटनाक्रम को उन देशों का आंतरिक मामला मानते हुए उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने से दूर रहा है। मालदीव के पहले लोकतांत्रिक रूप से चुने गए राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद को फरवरी 2012 में तख्तापलट द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। भारत ने इस पर कोई अंतरराष्ट्रीय मुद्दा नहीं उठाया तथा बिना किसी झिझक के नए राष्ट्रपति मोहम्मद वहीद की सरकार को मान्यता प्रदान करते हुए मैत्री के लिए हाथ बढ़ाया, यद्यपि नए राष्ट्रपति वहीद को भारतीय राष्ट्रीय हितों के लिए अनुकूल नहीं माना जाता था। किंतु कई बार मालदीव के नेताओं द्वारा भारत को हस्तक्षेप के लिए विवश किया गया। 13 फरवरी 2013 को पूर्व राष्ट्रपति नशीद ने वहीद सरकार द्वारा की जा सकने वाली गिरफ्तारी के डर से माले स्थित भारतीय उच्चायोग में शरण ली। इस परिस्थिति में भारत को राजनीतिक संकट के समाधान हेतु स्वयं को सम्मिलित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। मालदीव में व्याप्त राजनीतिक गतिरोध को समाप्त करने के उद्देश्य से भारत द्वारा प्रतिनिधिमंडल भेजा गया। मालदीव सरकार द्वारा भारत को मालदीव के घरेलू मामले में हस्तक्षेप न करने की चेतावनी जारी की गई।[11]

मालदीव में वर्ष 2018 के राजनीतिक अस्थिरता के संकट के समय भारत द्वारा कूटनीतिक दबाव बनाने की रणनीति अपनाई गई। राजनीतिक अस्थिरता के माहौल में मालदीव द्वारा भारत के सैन्य हस्तक्षेप की आशंका से सशंकित होने एवं चीन द्वारा इस अवसर पर मालदीव के साथ घनिष्ठता प्रदर्शित करने से भारत-मालदीव संबंधों में दूरियां निर्मित हुई। अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ स्वर्ण सिंह के अनुसार "पिछले एक दशक से भारत मालदीव के मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करने से बचा है और इसका सीधा लाभ चीन को मिला है।"[12]

मालदीव में चीन की बढ़ती भूमिका

भारत के लिए चीन की चुनौती केवल मालदीव में ही नहीं बल्कि भारत के सभी पड़ोसी देशों जैसे श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश और म्यांमार में भी है, लेकिन मालदीव में पाकिस्तान और चीन मिलकर काम करते हैं। अतः भारत के लिए स्थिति अधिक विकट हो जाती है। चीन की मालदीव में बढ़ती भूमिका से इस क्षेत्र में भारत की भूमिका सीमित होती है, जो भारत के राष्ट्रीय हितों के लिए हानिकारक है।

चीन द्वारा मोतियों की माला रणनीति में मालदीव को सम्मिलित करते हुए मालदीव में अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास किया गया। चीन द्वारा मालदीव से वर्ष 1999 में प्राप्त 'मराओ द्वीप' को पनडुब्बी बेस के रूप में विकसित करने एवं मालदीव में साझा महासागरीय वेधशाला स्टेशन स्थापित करने का प्रयास किया गया। चीन द्वारा मालदीव में आधारभूत परियोजनाओं में निवेश की मात्रा बढ़ाई जा रही है।

चीन की कर्ज जाल नीति और मालदीव

जॉन एडम्स ने कहा, "देश को जीतने और गुलाम बनाने के दो तरीके हैं, एक तलवार से और दूसरा कर्ज से"।[13] चीन अपने रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए 'बेल्ट एंड रोड प्रॉजेक्ट' के नाम पर आर्थिक रूप से कमजोर राज्यों को भारी मात्रा में ऋण देकर उन्हें अपने कर्ज के जाल में फंसा रहा है। चीन इन राज्यों की स्वायत्तता खत्म करके उन्हें अपने रणनीतिक प्रभाव में ला रहा है। चीन हिंद महासागर क्षेत्र में अफ्रीका में जिबूती से लेकर श्रीलंका तक विशाल कर्ज देकर रणनीतिक प्रभाव और सैन्य उपस्थिति स्थापित कर रहा है। जिबूती को अरबों डॉलर उधार देने के बाद चीन ने वहां अपना पहला विदेशी सैन्य अड्डा स्थापित किया। पाकिस्तान में चीन

ने ग्वादर बंदरगाह की सुरक्षा के लिए अपने युद्धपोत तैनात किए है। कर्ज नहीं चुका पाने के कारण श्रीलंका ने हंबनटोटा बंदरगाह को चीन को 99 साल के पट्टे के तहत 1.12 बिलियन डॉलर मूल्य पर सौंप दिया। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने चेतावनी दी है कि चीन के ऋणों की कीमत राष्ट्रीय संप्रभुता और आत्म-सम्मान तक हो सकती है।

चीन के बीआरआई में भाग लेने वाले 23 देशों में सर्वाधिक कर्जभार मालदीव पर है।[14] दिसंबर 2017 में नशीद ने दावा किया कि मालदीव पर 70% कर्ज चीन का है। जिस पर केवल ब्याज की दर मालदीव के बजट की 20% से अधिक है।[15] नशीद के अनुसार मालदीव पर चीन का कर्ज केवल आर्थिक मुद्दा नहीं है बल्कि मानवाधिकारों, स्वतंत्रता और संप्रभुता का मुद्दा भी।[16] वैश्विक विकास केंद्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, मालदीव लगातार चीन से ऋण लेने के कारण विशेष जोखिम वाले 8 देशों में से एक है और ऋण संकट से पीड़ित हो सकता है।[17] मालदीव की सरकार को अपनी कुल आय का 53 प्रतिशत हिस्सा कर्ज चुकाने में खर्च करना पड़ रहा है।[18] चीन द्वारा मालदीव में ऋण नहीं चुका पाने पर द्वीपों का अधिग्रहण भी किया जा रहा है। चीन ने मालदीव के फेयधू फिनोल्हू द्वीप का अधिग्रहण कर वहां निर्माण कार्यों को बढ़ावा दिया है। उसने इस द्वीप के आस-पास की गहराई को पाटते हुए उसका आकार 38 हज़ार वर्गमीटर से बढ़ा कर एक लाख वर्गमीटर कर दिया है। चीन ने वहां एक सैन्य अड्डा बनाने की बात भी स्वीकार की है।[19]

भारत पर प्रभाव—भारत चीन की इन गतिविधियों से चिंतित है क्योंकि इस तरह की गतिविधियों क्षेत्रीय रणनीतिक संघर्ष को बढ़ाती है। इससे भारत के साथ सामान्यतः अच्छे संबंधों वाला मालदीव राजनैतिक दृष्टि से किसी भी समय चीन के पाले में जा सकता है। दूसरा, यदि चीन ने मालदीव में नौसैन्य अड्डा स्थापित किया तो यह नौसैन्य अड्डा भारत से निकटता के कारण हिंद महासागर में भारत के सुरक्षा-हितों और सभी प्रकार के जहाज़ों के आवागमन के लिए दीर्घकालिक ख़तरा बन जायेगा। चीन मालदीव में अपने नौसैनिक अड्डे का उपयोग परमाणु पनडुब्बियों के संचालन के साथ-साथ भारतीय पनडुब्बियों की जासूसी के लिए भी कर सकता है। "मालदीव में जिबूती-प्रकार के नौसैन्य अड्डे की स्थापना करके चीन, भारत के खिलाफ हिंद महासागर के मोर्चे को उसी शांत तरीके से खोल सकता है, जिस तरह से उसने माओत्से तुंग के काल में ऐतिहासिक बफर 'तिब्बत' पर कब्जा करके ट्रांस-हिमालय के खतरे को खोल दिया था।"[20]

मालदीव को चीन के कर्ज से सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि चीन मालदीव को अपने जाल में फंसाने और भारत से दूर करने की पूरी कोशिश कर रहा है। नशीद के अनुसार "चीन मालदीव को चलाने के लिए एक अनुशासनात्मक उपकरण के रूप में एक ऋण जाल का उपयोग कर रहा है और मालदीव में तानाशाही, मानव अधिकारों का हनन, स्थानीय असंतोष के दमन का समर्थन करने के बदले में, चीन द्वारा मालदीव में वित्त पोषित की जा रही विशाल आधारभूत परियोजनाओं में तेजी से भूमि हड़पने की प्रक्रिया जारी है।"[21]

इंडिया आउट कैंपेन

राष्ट्रपति सोलिह के मालदीव के राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद वर्ष 2018 से मालदीव में विशेष रूप से वहां के सोशल मीडिया पर इंडिया आउट कैंपेन प्रारंभ किया गया। इस अभियान के द्वारा मालदीव में तैनात 2 भारतीय हेलीकॉप्टरों जो कि लामू और अड्डू एटोल में तैनात है और एक डोर्नियर विमान की उपस्थिति का विरोध किया जा रहा है, क्योंकि इसे मालदीव में भारतीय सेना की उपस्थिति मानते हुए मालदीव की संप्रभुता के लिए खतरा माना जा रहा है। भारत द्वारा मालदीव को दो हेलीकॉप्टर क्रमशः 2010 और 2015 में दिए गए। इनका प्रयोग मालदीव द्वारा खोज, बचाव कार्य, समुद्री मौसम की निगरानी के लिए किया जाता है। ये हेलीकॉप्टर्स मालदीव में मानवीय उद्देश्यों के लिए है। लेकिन प्रोग्रेसिव पार्टी ऑफ मालदीव्स यह चित्रित कर रही है कि भारत मालदीव में इन हेलीकॉप्टरों एवं इनमें कार्यरत सैनिकों के माध्यम से मालदीव में सैन्य उपस्थिति बढ़ा रहा है। क्योंकि भारत-मालदीव में हुए द्विपक्षीय समझौते की शर्तों के अनुसार इनका संचालन मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बलों को प्रशिक्षित करने वाले भारतीय अधिकारियों की कमान के तहत किया जाता है। अभियान का नेतृत्व विपक्षी दलों विशेष रूप से पीपीएम द्वारा किया जा रहा है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन के जेल से रिहा होने के बाद इस आंदोलन में और अधिक तेजी आयी। इस आंदोलन के समर्थकों द्वारा मालदीव सरकार पर भारतीय जूते को जमीन पर उतारने और राष्ट्र की संप्रभुता से समझौता करने का आरोप लगाया जा रहा है।[22] भारत द्वारा अड्डू एटोल में वाणिज्य दूतावास खोलने का

एवं फरवरी 2021 में उथुरूथिला फल्हु में बंदरगाह विकास के लिए मालदीव के साथ किए गए समझौते का मालदीव में भारतीय सेना की उपस्थिति की अनुमति मानकर इस अभियान के तहत विरोध किया गया।

भारत पर प्रभाव—इंडिया आउट कैंपेन से भारत-मालदीव संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, विशेष रूप से मालदीव के जनमानस में भारत के प्रति नकारात्मक भावनाएं पैदा हो रही हैं। इंडिया आउट अभियान के लिए वास्तव में मालदीव की राजनीति से प्रेरित छोटे वर्ग उत्तरदायी हैं। यह सत्य है कि मालदीव में एक वर्ग ऐसा है जो भारत का विरोधी है तथा जिसे चीन, पाकिस्तान और वहां के कुछ राजनीतिक दलों का समर्थन प्राप्त है।

वर्तमान मुइज़्ज़ू सरकार और भारत-मालदीव संबंधों में चुनौतियाँ

अक्टूबर 2023 मे मोहम्मद मुइज़्ज़ू मालदीव के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। मुइज़्ज़ू के चुनावी अभियान में भारत एक अहम मुद्दा रहा। उन्होंने ही इंडिया आउट कैंपेन भी चलाया था। मुइज़्ज़ू का कहना था कि उनकी सरकार मालदीव की संप्रभुता से समझौता कर किसी देश से क़रीबी नहीं बढ़ाएगी। उन्होंने राष्ट्रपति चुनाव में जीत के बाद कहा था, "लोग नहीं चाहते हैं कि भारत के सैनिकों की मौजूदगी मालदीव में हो। विदेशी सैनिकों के मालदीव की ज़मीन से जाना होगा।"[23]

हाइड्रोग्राफ़िक सर्वे समझौता रद्द करना

दिसंबर 2023 मे मालदीव ने भारत के साथ 8 जून 2019 को हुए हाइड्रोग्राफ़िक सर्वे समझौते को रद्द कर दिया।[24] इस सर्वे के तहत भारत और मालदीव को मिलकर मालदीव के इलाक़े में जल क्षेत्र, रीफ़, लैगून, सामुद्रिक लहरों और उसके स्तर का अध्ययन करना था। हाइड्रोग्राफ़िक सर्वे समझौता रद्द करने के मालदीव के फ़ैसले के बाद अब ये कहा जा रहा है कि इस क्षेत्र में चीन की तुलना में भारत का रणनीतिक असर घटने के आसार बढ़ गए हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लक्षद्वीप यात्रा और भारत मालदीव संबंधों में तनाव

जनवरी 2024 में लक्षद्वीप की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी यात्रा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर कीं। कई उपयोगकर्ताओं ने इस द्वीप की तुलना हिंद महासागर में दक्षिण में स्थित मालदीव से की। यह तब एक कूटनीतिक विवाद बन गया जब मालदीव के युवा मंत्रालय के तीन उप-मंत्री—मालशा शरीफ, मरियम शिउना और महज़ूम मजीद ने भी भारत और श्री मोदी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने वाले पोस्ट पर टिप्पणी की। भारतीयों के खिलाफ मालदीव के मंत्रियों की टिप्पणी पर आक्रोश बढ़ता गया। कई लोगों ने मालदीव देश में पर्यटन का बहिष्कार करने का आह्वान किया। मालदीव के विदेश मंत्रालय ने उनकी टिप्पणियों से खुद को अलग करते हुए कहा कि उनके व्यक्तिगत विचार देश की स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करते। मालदीव सरकार ने उन्हें निलंबित कर दिया। मालदीव में भारतीय पर्यटकों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है, जहां की 20% से अधिक अर्थव्यवस्था पर्यटन पर निर्भर है। मोदी ने पर्यटकों को लक्षद्वीप आने के लिए प्रोत्साहित किया उसके बाद के महीनों में मालदीव में भारतीय पर्यटकों की बुकिंग में 33 प्रतिशत की गिरावट आई।[25]

मालदीव का चीन के प्रति बढ़ता झुकाव

मोहम्मद मुइज़्ज़ू प्रोग्रेसिव पार्टी ऑफ़ मालदीव (पीपीएम) गठबंधन के नेता हैं और इस गठबंधन को चीन के साथ क़रीबी रिश्तों के लिए जाना जाता है। इस गठबंधन ने अतीत में चीनी कर्ज़ और निवेश का खुलकर समर्थन किया। मुइज़्ज़ु ने अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए तुर्की को चुना और इस दौरान वहां मालदीव का दूतावास खोला। मुइज़्ज़ु की तुर्की यात्रा के बाद मालदीव के उप-राष्ट्रपति हुसैन मोहम्मद लतीफ़ चीन पहुँचे। लतीफ़ वहां चीन की अगुआई वाले चाइना-इंडिया फ़ोरम ऑन डेवलपमेंट को-ऑपरेशन की बैठक में हिस्सा लेने पहुँचे थे। जबकि ऐसे ही एक और फ़ोरम, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन के प्रति मालदीव का रुख़ इतना सकारात्मक नहीं रहा था।

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज़्ज़ू के नेतृत्व में मालदीव-चीन द्विपक्षीय संबंध और भी मज़बूत हुए। मालदीव में चीनी आयात भी साल दर साल बढ़ रहा है, जो 2021 में लगभग 320 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2023 में 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है।[26] मुइज़्ज़ू ने जनवरी 2024 में अपनी पहली राजकीय यात्रा के लिए चीन को चुना, जहाँ उन्होंने बीजिंग के साथ बीस नए समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिनमें वित्तीय और सैन्य सहायता शामिल थी। सितंबर 2024 में कर्ज के बोझ तले दबे मालदीव ने चीन

के साथ अपनी मुद्राओं में चालू खाता लेनदेन के लिए एक समझौता किया।[27] इससे दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश संबंध मजबूत हुए। 2025 में, दोनों देशों ने चीन-मालदीव मुक्त व्यापार समझौते को सक्रिय किया। चीन वर्तमान में मालदीव का सबसे बड़ा बाहरी ऋणदाता है, जिसका मालदीव के बाहरी ऋण का 42 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है।[27]

भारत-मालदीव संबंधों में सुधार हेतु सुझाव

उपर्युक्त विवेचित चुनौतियों के दृष्टिगत मालदीव के साथ संबंधों के सुधार हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

- भारत को मालदीव में नव लोकतांत्रिक संस्थाओं के सशक्तिकरण में सहयोग देना चाहिए।
- भारत और मालदीव के लोगों के मध्य संपर्क बढ़ाया जाना चाहिए।
- मालदीव में भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ाई जाए। इसके लिए भारतीय पर्यटकों को मालदीव में आकर्षक पैकेज प्रदान कर मालदीव के पर्यटन उद्योग में भारत की भागीदारी बढ़ानी चाहिए।
- भारत को मालदीव के साथ कुछ विशेष वस्तुओं के संबंध में मुक्त व्यापार समझौता करके व्यापारिक संबंधों को बढ़ाना चाहिए।
- भारतीय मीडिया को मालदीव में घटनाक्रम कवरेज के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- मालदीव में चीन की सैन्य उपस्थिति को कमजोर करने के लिए भारत द्वारा हिंद महासागर के अन्य द्वीप राष्ट्रों जैसे सेशेल्स और मॉरीशस आदि में अपनी सैन्य उपस्थिति सशक्त करे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारत-मालदीव संबंध परस्पर सहयोग एवं विश्वास पर आधारित होने के उपरांत भी भारत मालदीव संबंधों में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान रही है। यद्यपि सत्ता परिवर्तन के साथ ये चुनौतियाँ कम-ज्यादा होती रही हैं। भारत-मालदीव संबंधों में आज प्रमुख चुनौती यह है कि मालदीव में बढ़ते कट्टरपंथ तथा चीन की ओर झुकाव रोका जाए। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि मालदीव के साथ संबंधों में एक एकीकृत व समन्वित नया एंजेडा अपनाया जाए, जिससे सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक,सामरिक सभी स्तरों पर संबंध मधुर किये जा सके।

सन्दर्भ सूची

1. अल्बर्ट, ई., कंपटीशन इन द इंडियन ओसियन, सीएफआर,1 मई, 2016
2. सिंधु, एस. एवं गोडबोले, एस., नेबर हुड फर्स्ट : बायलेटरालिज्म ट्रम्प्स रीजनलरिज्म, ब्रुकिंग्स, 26 मई, 2015
3. पद्मजा, जी., रिविजिटिंग सागर इंडियास टेंप्लेट फॉर कोऑपरेशन इन द इंडियन ओशन रीजन, नेशनल मैरिटाइम, 25अप्रैल, 2018
4. स्वामी, पी., द जिहाद इन पैराडाइज, आउटलुक, 20 नवंबर, 2007
5. सिंह, ए., मालदीव्स इज नो लोंगर ए 'पैराडाइज', इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर काउंटरटेररिज्म, 2 अप्रैल, 2015
6. रौल, ए., द थ्रेट फ्रॉम राइजिंग एक्स्ट्रेमिज्म इन द मालदीव्स, वॉल्यूम 6, इश्यू 3, कॉमबेटिंग टेररिज्म सेंटर, मार्च, 2013
7. स्टोरे, एच., वायलेंट एक्स्ट्रेमिज्म इन मालदीव्स : द सऊदी फेंककर, द डिप्लोमेट, 24 दिसंबर, 2019
8. जहीर, ए., कोविड-19 के आगमन के साथ ही मालदीव में इस्लामिक स्टेट का आतंक, द डिप्लोमेट, 18 अप्रैल, 2020
9. मिश्र, पी., इस्लामिक कट्टरपंथियों के गढ़ बने मालदीव में टैटू बनवाया तो खैर नहीं फतवा जारी, नव नवभारत टाइम्स, 15 जनवरी, 2024
10. पर्यटन मंत्रालय, मालदीव गणराज्य, वार्षिक रिपोर्ट, 2012
11. नाही, एम., इंडिया शुड स्टॉप मैडलिंग विद मालदीव्स डोमेस्टिक मैटरस होम मिनिस्टर जमील, 14 फरवरी, 2013
12. शर्मा, बी., मालदीव क्यों नहीं जा रही भारतीय फौज? बीबीसी न्यूज़, 9 फरवरी, 2018
13. चेलानी, ब्रह्म, चाइना इज एंसनरिंग वलनेरबल स्टेटस इन डेब्ट ट्रैपस, निक्कीएशिया, 1 मार्च, 2018
14. ब्रूस्टर, डी., बिटवीन जियांटस द सिनो इंडियन कोल्ड वार इन द इंडियन ओशन असाइड, आईएफआरआई, दिसंबर, 2018
15. पाराशर, एस., चाइना'ज ओशन ऑब्जर्वेटरी इन मालदीव्स स्पार्क्स फ्रेश सिक्योरिटी कंसर्न्स, द टाइम्स ऑफ इंडिया, 26 फरवरी, 2018
16. दीक्षित, आर., चाइनीस डेब्ट ट्रैप नॉट जस्ट इन इकोनामिक ईशु : मालदीव्स स्पीकर नशीद द वीक, 13 दिसंबर, 2019

17. चौधरी, आर., हाउ चाइना इज एक्सपेंडिंग ग्लोबल इनफ्लुएंस वाया ट्रैप डिप्लोमेसी, द वायर, 7 मार्च, 2021
18. शुक्ला, एस., दादी की जूलरी बेचकर भी नहीं चुका सकते चीन का कर्ज : मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति का छलका दर्द, नवभारत टाइम्स, 19 नवंबर, 2020
19. यादव, आर., जिसकी हिंद महासागर में चलेगी एशिया में उसी की तूती बोलेगी, सत्याग्रह, 5 अगस्त, 2020
20. चेलानी, ब्रह्म, चाइना इज एंसनरिंग वलनेरबल स्टेटस इन डेब्ट ट्रैपस, निक्कीएशिया, 1 मार्च, 2018
21. त्रिगुणायत, ए., इंडिया एंड मालदीव्स : रिलेशनस बिटवीन द इंडियन ओशन नेबर्स बैक ऑन ट्रैक, फाइनेंशियल एक्सप्रेस, 19 दिसंबर, 2018
22. श्रीनिवासन, एम., द इंडिया आउट कैंपेन इन द मालदीव्स, द हिंदू, 27 दिसंबर, 2021
23. मालदीव से भारतीय सैनिकों को हटाने के बयान पर भारत का जवाब, कैसे बिगड़ने शुरू हुए थे संबंध, बीबीसी न्यूज, 6 अक्टूबर, 2023
24. मंडल, डी., मालदीव : 'इंडिया आउट' का नारा देने वाले मुइज़्ज़ू का भारत को एक और झटका मोदी सरकार के पास क्या है काट?, बीबीसी न्यूज, 16 दिसंबर, 2023
25. निहालनि, जे., मोदी के लक्षद्वीप दौरे के बाद भारतीय पर्यटकों के बहिष्कार के आह्वान का मालदीव पर असर पड़ सकता है, द हिंदू, 11 जनवरी, 2024
26. कुमार, एस., मालदीव की मुइज्ज़ू सरकार ने चीन के साथ किया एक और समझौता : भारत की बढ़ेंगी मुश्किलें?, जी न्यूज, 14 सितंबर, 2024
27. मोहम्मद, आई., भारत और चीन के बीच मालदीव अपने संबंध कैसे सफलतापूर्वक संचालित कर सकता है, साउथ एशियन वॉइस, 20 मार्च, 2025